धर्मकार्य हेतु विज्ञापन आदि अर्पण प्राप्त करना समष्टि साधना है !

भूमिका

१. कलियुगमें समष्टि साधनाका महत्त्व अधिक होनेके कारण सनातनके साधकोंका 'सनातन प्रभात' नियतकालिकसे सम्बन्धित समस्त कार्य साधनाके रूपमें करना : 'जनमानसपर उचित संस्कार करनेमें समाचार-पत्रोंका अमूल्य योगदान होता है । इसलिए अध्यात्मप्रसारका प्रमुख कार्य करनेवाली सनातन संस्थाने अप्रैल १९९८ से मराठी साप्ताहिक 'सनातन प्रभात'के माध्यमसे पत्रकारिताके क्षेत्रमें कार्य आरम्भ किया । आज सनातन संस्था मराठी दैनिक 'सनातन प्रभात'के चार संस्करण, मराठी और कन्नड साप्ताहिक 'सनातन प्रभात', हिन्दी और अंग्रेजी पाक्षिक 'सनातन प्रभात'के माध्यमसे अध्यात्मप्रसारके साथ-साथ राष्ट्ररक्षा और धर्मजागृति का कार्य भी कर रही है । कलियुगमें व्यष्टि साधनास अधिक महत्त्व समष्टि साधनाका होता है; इसलिए सनातनके साधक सनातन संस्थाके संस्थापक परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीकी कृपा एवं आशीर्वादसे नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के लिए सम्पादकीय लिखना, समाजमें जाकर समाचार संकलित करना, यहांसे लेकर उसे प्रकाशित कर घर-घर पहुंचाने तकके सभी कार्य साधनाके रूपमें कर रहे हैं ।

२. गुरुकार्यका विस्तार होनेकी दृष्टिसे सूझी नई-नई अवधारणाएं और विज्ञापन प्राप्त करनेकी सेवा करते समय सीखनेको मिले सूत्र : परात्पर गुरु डॉक्टरजीकी कृपासे वर्ष १९९९ में मुझे मुंबईमें विज्ञापन प्राप्त करनेकी सेवा मिली और उसके लिए मैंने जनसम्पर्क करना आरम्भ किया । अगले एक वर्षमें ही मैं महाराष्ट्रके अनेक जनपदोंमें विज्ञापन-सम्बन्धी सेवा करनेके लिए जाने लगी । नियतकालिक 'सनातन प्रभात'की सेवाके साथ-साथ मैं पंचांग, बहियां, भित्तीपत्रक, ग्रन्थ आदि के लिए भी विज्ञापन लानेकी सेवा करने लगी । इस सेवाके अन्तर्गत मुझे गुरुकार्यका विस्तार होनेकी दृष्टिसे कुछ नई-नई अवधारणाएं

सूझती रहीं और वे साकार भी हुईं; उदा. 'किसी विशिष्ट विषयपर 'सनातन प्रभात'का विशेषांक प्रकाशित करना, फ्लेक्सके माध्यमसे प्रचार-प्रसार करना, सनातन पंचांग, बहियां, ग्रन्थ के लिए विज्ञापन प्राप्त करना, सनातन संस्थाके ग्रन्थोंका विज्ञापन करनेके लिए होर्डिंगका उपयोग करना, जनसाधारणको परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीका जीवनचरित्र देखनेके लिए मिले, इसके लिए उनके ७५ वें जन्मदिनपर चित्रमय दर्शन पुस्तिका प्रकाशित करना' इत्यादि । इसके अतिरिक्त, मैं सनातन संस्था और आश्रम के लिए आर्थिक तथा वस्तु रूपमें अर्पण प्राप्त करनेकी सेवा भी कर रही हूं ।

मैंने कुछ वर्ष 'सनातन पंचांग'के लिए विज्ञापन प्राप्त करनेकी सेवा भी की है । इस सेवाके निमित्त मेरा उत्तर और दक्षिण भारतके अनेक साधकों तथा विज्ञापनदाताओं से सम्पर्क हुआ । उस समय हमें समाजसे सकारात्मक प्रतिसाद मिला । मेरे जैसे कुछ अन्य साधक भी पिछले कुछ वर्षोंसे अपने-अपने क्षेत्रमें विज्ञापन प्राप्त करनेकी सेवा कर रहे हैं । 'प्रचारके लिए बाहर जानेपर लोगोंसे कैसे बोलना चाहिए, व्यवसायियोंसे आत्मीयता कैसे बढाएं', ऐसे अनेक सूत्र हम विज्ञापन लानेवाले साधकों को सीखनेको मिले । उनमेंसे कुछ सूत्र इस ग्रन्थमें आगे दिए हैं ।

अ. नियतकालिक प्रकाशित करना, समष्टि साधनाका उत्तम माध्यम है । इस सेवाका एक प्रमुख भाग है, विज्ञापन प्राप्त करना

आ. विज्ञापन लानेके माध्यमसे साधना कैसे होती है ? इसके माध्यम से साधना होनेके लिए साधकोंमें कौन-से गुण होने चाहिए ? विज्ञापन -दाताओंके प्रश्नोंके उत्तर कैसे देने चाहिए ?

इ. विज्ञापन प्राप्त करनेकी सेवा परिपूर्ण होनेसे लेकर, प्रकाशित विज्ञापनसे युक्त अंक विज्ञापनदाताओंको मिलनेतक बनाई जानेवाली कार्ययोजना इ.

इस ग्रन्थमालामें आगे दिए विषयोंपर ग्रन्थ प्रकाशित होनेवाले हैं ।

१. विज्ञापन प्राप्त करने हेतु साधकोंद्वारा किए प्रयत्न

२. विज्ञापन प्राप्त करते समय साधकोंको हुए अच्छे-बुरे अनुभव एवं अनुभूतियां, सीखनेको मिले सूत्र और स्वयंमें हुए परिवर्तन

३. विज्ञापनदाताओंसे मिला सकारात्मक प्रतिसाद

४. विज्ञापन देनेसे विज्ञापनदाताओंको उनके व्यवसाय और व्यक्तिगत जीवनमें हुई अनुभूतियां

५. विज्ञापनदाताओंका साधक बनना

६. विज्ञापन लेनेकी सेवामें हुई सन्तोंके संकल्पकी प्रतीति

७. श्रीमती स्मिता नवलकरकी साधनायात्रा

३. 'परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके शब्द, पत्थरकी रेखा (लकीर) है !' ऐसा अनुभव होना : वर्ष २००२ में परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीने एक बार मुझसे कहा था, ''हमें 'विज्ञापन प्राप्त करना' इस विषयपर सनातन संस्थाका ग्रन्थ प्रकाशित करना है ।'' उस समय मैंने केवल 'हां' कहा था । आगे मेरे मनमें विचार आया, 'इस विषयपर अधिकसे अधिक एक छोटी पुस्तिका बनेगी'; परन्तु प्रत्यक्ष सेवा आरम्भ करनेपर, 'विज्ञापन प्राप्त करनेकी सेवा' समष्टि साधनाका उत्तम माध्यम है !', इसका भान मुझे ईश्वरने कराया । अब इस सेवाके माध्यमसे 'विज्ञापनके विषयमें सीखने हेतु मिले सूत्र, अनुभव, अनुभूतियां, सेवाका महत्त्व' आदि जानकारी इस ग्रन्थके माध्यमसे गुरुचरणोंमें अर्पित करनेका अवसर ईश्वरने हमें दिया है, इसके लिए कृतज्ञता ! वर्ष २००२ में गुरुदेवजीने जो संकल्प किया था, वह अब वर्ष २०२० में पूर्ण हो रहा है । इससे मुझे यह प्रतीति हुई कि 'गुरुदेव रात्पर गुरु डॉक्टरजीके शब्द काले पत्थरकी रेखा (लकीर) हैं !'

४. कृतज्ञता एवं प्रार्थना : परात्पर गुरु डॉक्टरजीने जो यह अवसर दिया है, इसके लिए मैं उनके चरणोंमें कृतज्ञता व्यक्त कर प्रार्थना करती हूं, 'वे मेरे जीवनके अन्तिम क्षणतक मुझसे तथा अन्य साधकोंसे भी इसी प्रकार सेवा करवा लें ।' यह ग्रन्थ उनके चरणोंमें अर्पित करती हूं ।'

– श्रीमती स्मिता नवलकर, संकलनकर्त्री एवं विज्ञापन-सेविका

अनुक्रमणिका

[कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए गए हैं ।]

१. धर्मकार्य हेतु अर्पण प्राप्त करना,
भलीभांति समष्टि साधना करनेका सरल मार्ग ! १६

२. किसी भी प्रकारका अर्पण (दान)
प्राप्त करने हेतु सबके लिए उपयुक्त ग्रन्थ ! १६

३. सनातनके ग्रन्थ, नियतकालिक 'सनातन प्रभात' और स्मारिका
आदि के लिए विज्ञापन प्राप्त करनेके विषयमें सैद्धान्तिक जानकारी १७

* गुरुपूर्णिमाके निमित्त अथवा अन्य विज्ञापन लेनेके लिए किससे
सम्पर्क करें ? १८

* साधकोंकी दृष्टिसे विज्ञापन लेनेका महत्त्व २२

* विज्ञापनसेवा करते समय की जानेवाली प्रार्थना व कृतज्ञता २५

४. विज्ञापन लानेकी सेवाके सन्दर्भमें साधकोंकी भ्रान्तियां
और वास्तविकता २६

५. विज्ञापनदाताद्वारा पूछे जानेवाले प्रश्नोंका भय और उसपर
समाधानयोजना २७

६. विज्ञापन प्राप्त करते समय आनेवाली समस्याएं और उनके उपाय ४१

७. विज्ञापनसेवामें व्यवहारिक स्तरपर करनेयोग्य प्रयत्न ४३

८. विज्ञापनसेवा करनेके माध्यमसे होनेवाली साधना ९१

९. प्रसारसेवाके कारण साधकको साधनाकी दृष्टिसे होनेवाले लाभ १०३

१०. साधको, विज्ञापन प्राप्त करनेकी सेवा कर परात्पर गुरु डॉक्टरजी
द्वारा साधनाके लिए किए हुए संकल्पका लाभ उठाओ ! १०७

११. विज्ञापनसेवा करनेवाले साधकोंने की प्रार्थना १०७